❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 40, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 फरवरी, 2017 से रविवार 19 फरवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चलो केरल! चलो केरल!! केरल चलो!!!

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के भवन उद्घाटन एवं

दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन

1–2 अप्रैल, 2017 (शनिवार एवं रविवार)

सान्निध्य	उद्घाटन	अध्यक्षता
आचार्य एम. आर. राजेश	महाशय धर्मपाल	श्री सुरेशचन्द्र आर्य
अध्यक्ष, कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन	चेयरमैन, एम.डी.एच	प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

समारोह में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी रेल/हवाई टिकटें अभी से आरक्षित करवा लेवें। कोझिकोड (केरल) के लिए हवाई सेवाएं एवं रेल सेवा – राजधानी एवं अन्य रेलगाड़िया उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए श्री सन्दीप आर्य 9650183339 से सम्पर्क करें।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर समारोह को सफल बनाएं एवं समारोह के साक्षी बनें

निवेदक
प्रकाश आर्य (मन्त्री), डॉ. राधाकृष्ण वर्मा (उप प्रधान) – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री) – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विवेक शिनॉय (संयोजक) – कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट

महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव पर विशेष

आर्यसमाज का महत्त्व, सिद्धान्त और विशेषताएं

– डॉ. महेश विद्यालंकार

संसार में प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। जो वेदों द्वारा बताया हुआ और वेदानुकूल धर्म है, वह वैदिक धर्म कहलाता है। वैदिक धर्म सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत के कुछ समय पहले तक था। धार्मिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्शों आदि के पतन के कारण सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इसी कारण महाभारत हुआ। लोग वेदविद्या को भूल गए। असली धर्म-कर्म, पूजा पाठ, भक्ति, परमात्मा आदि छूट गए। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम आदि फैलने लगा। सब जगह परमात्मा की जगह देवी-देवताओं, गुरुओं और महन्तों की पूजा होने लगी। वैदिक धर्म में अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा तथा अज्ञानता आ जाने के बाद वह सनातन धर्म कहलाने लगा। मूलतः वैदिक धर्म ही था।

आर्य समाज का उदय ऐसे समय में हुआ जबकि चारों ओर घोर अविद्या अन्धकार और ढोंग-पाखण्ड फैला हुआ था। धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर लोगों को ठगा और बहकाया जाता था। वेदों को गड़रियों के गीत और धूर्तों के बनाए हुए बताया जा रहा था। नारी जाति को गायत्री मन्त्र, वेदों का पढ़ना, यज्ञ करने-कराने से रोका जा रहा था। यज्ञों में पशुबलि की प्रथा फैल रही थी। लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता, महापुरुषों तथा सद्ग्रन्थों को भूलते जा रहे थे। ऐसे घोर अज्ञान भरे समय में सदियों के बाद पुण्यात्मा देव दयानन्द का आगमन हुआ। ऋषि का आगमन भारत का भाग्योदय था।

उन्होंने वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, वेदविद्या, यज्ञ, नारी शिक्षा, महापुरुषों, जीवन मूल्यों आदि का सत्य स्वरूप बताया। उन्होंने हमें स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति, स्वत्व आदि से जोड़ा। उन्होंने सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार और ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, अज्ञान आदि को हटाने तथा मिटाने में लगा दिया। उन्होंने

– शेष पृष्ठ 7 पर

समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थान उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृ. 10) – शिवरात्रि (फाल्गुन कृ. 13)
मंगलवार 21 फरवरी से शुक्रवार 24 फरवरी, 2017

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस फाल्गुन कृष्ण 10 दयानन्द दशमी को हुआ था तथा 12 वर्ष की आयु में शिवरात्रि को बालक मूलशंकर को बोध प्राप्त हुआ था। इस वर्ष जन्मदिवस 21 फरवरी तथा बोध दिवस 24 फरवरी को है। इस दिन सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। – महामन्त्री

वेद-स्वाध्याय

हे मुमुक्षो ! तू उसको जान

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।। -अथर्व. 10/8/44
ऋषिः कुत्सः।। देवता - आत्मा।। छन्दः त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- जो **अकामः**=सर्वथा कामनारहित **धीरः**=धीर **अमृतः**=कभी न मरनेवाला **स्वयंभूः**= स्वयं अपने आधार से सदा विद्यमान **रसेन तृप्तः**=आनन्द-रस से परितृप्त तथा कुतश्चन न **ऊनः**=किसी प्रकार की कोई भी न्यूनता न रखने वाला है। **तम्**=उस **धीरं, अजरं युवानं, आत्मानं एव विद्वान्**=धीर, अजर, सदा तरुण को आत्मस्वरूप जानकर ही मनुष्य **मृत्योः न बिभाय**=मृत्यु से नहीं डरता-मृत्यु से निर्भय हो जाता है।

विनय-हे मृत्युभय से तर जाना चाहनेवाले मुमुक्षो! तू उस एक सर्वव्यापक तत्त्व को देख जोकि सर्वथा 'अकाम' है, जिसमें किसी प्रकार की भी कोई कामना नहीं, अतएव जो कभी भी चलायमान नहीं होता, सदा सर्वथा धीर है; जो कभी न मरेगा और न कभी पैदा हुआ है, जो स्वयं ही अपने आधार से सदा विद्यमान है। जिसे कभी किसी अन्य ने जन्म नहीं दिया, जिस सनातन की सत्ता किसी अन्य के आश्रित नहीं, अतएव जिसकी अमृत सत्ता कभी खण्डित भी नहीं हो सकती, विनाश को नहीं प्राप्त हो सकती; जो आनन्दरस से सर्वथा परिपूर्ण है; हम लोग आनन्ददायक भोजन को यथेष्ट खाकर जैसे कुछ देर के लिए छके हुए, परितृप्ति की अवस्था में रहते हैं वैसी आप्यायित अवस्था में जो सदा, त्रिकाल में रहता है, जो आप्तकाम है; जिसमें कोई किसी प्रकार की कमी, न्यूनता, अपेक्षा व आवश्यकता नहीं है, जो सर्वथा परिपूर्ण है, अखण्ड है, अतएव जो अकाम हुआ है उसे देख, उस एक तत्त्व को देख, उसे पहचान! उस तत्त्व को अपने अन्दर खोज, अपने अन्दर पहचान! वह दीखता है कि नहीं? क्या तू अपने-आपको वैसा अजर, अमर तत्त्व नहीं देखता? जब तू अपने-आपको अचलायमान, कभी बुड्ढा न होनेवाला, एकरस, नित्य, हमेशा एक-समान युवा (जवान) देख लेगा तभी-केवल तभी-तू मृत्युभय से पार होगा। उस सच्चे आत्मस्वरूप को देख लेने के पश्चात् तू शरीर नहीं रहेगा। तब तू वही धीर, अजर, अमर तत्त्व हो जाएगा। तब मृत्यु कहाँ रहेगी? तब तो जीने-मरने में कोई भेद नहीं रहता, जीवन-मरण दोनों ही जीवन हो जाते हैं, एक नये प्रकाश का नित्य जीवन हो जाते हैं। हज़ारों मृत्युओं के बीच में भी आत्मा अपनी अमरता को घोषित करता है, परन्तु जब तक इस आत्मस्वरूप का साक्षात् न हो जाए, मनुष्य अपने देह से बिल्कुल पृथक्, अपने-आपको अजर-अमर न देख ले, तब तक मृत्युभय नहीं जा सकता। मृत्यु से निर्भय होने का संसार में अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं। जब तक मनुष्य ने यह आत्म स्वरूप न पा लिया हो तबतक वह चाहे जितना विद्वान, हज़ारों ग्रन्थों को पढ़ने-पढ़ाने और बनाने वाला हो जाए, उपदेष्टा हो जाए, परन्तु वह उसी प्रकार मृत्यु का मारा हुआ फिरता है जैसेकि एक चींटी या एक खटमल मरण-त्रास से डरकर भागता है। देखो, वह अखण्ड, एकरस, सर्वथा अकाम, अचल, अमर, अभय, नित्यतत्त्व! यदि मृत्यु को जीतना है तो देखो-अपने धीर, अजर, अमृत, आत्मा को।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बिना धर्म के लोग!

कश्मीर से हिन्दू निकाले गये, उन्हें राजनीति से लेकर मीडिया ने बड़े आराम से कह दिया कि नहीं-नहीं साहब वहां से पंडित निकाले गये। सब चुप कि चलो पंडित निकले। मुजफरनगर में दंगा हुआ उसे बड़ी सावधानी से इन्हीं लोगों ने यह कह दिया कि नहीं साहब ये हिन्दू-मुस्लिम नहीं यह तो जाट-मुस्लिम दंगा था। सब चुप कि चलो हिन्दू मुस्लिम होता तो देखते। जब मालाबार में हिन्दू मारे गये थे तब भी यही कहा गया था कि यह दंगा वहां के नम्बूदरी ब्राह्मणों और मुस्लिमों के बीच था। कैराना से हिन्दू निकाले गये तो मीडिया ने कहा नहीं- नहीं साहब यह तो मात्र कुछ व्यापारियों का पलायन था। अभी बंगाल के धुलागढ़ में हिन्दुओं पर अत्याचार हुआ तो कहा गया नहीं-नहीं यह तो दलितों और मुस्लिमों के बीच का मामला था। यदि ऐसा है तो फिर क्या भारत की 80 फीसदी बहुसंख्यक आबादी बिना धर्म की है? आखिर इन्हें किस एजेंडे के तहत जातिवाद में बांटा जा रहा है बस आज यही सोचने का विषय है ?

क्या कभी देश में फिर ऐसा चाणक्य आएगा जो एक-एक बिखरी हुई आबादी का नेतृत्व करने की काबलियत रखता हो? अनैतिक राजनीतिज्ञों से निपटने और विश्व राजनीति के दाँवपेचों को भी समझने की उनकी क्षमता रखता हो? शायद सबका जवाब होगा कि चाणक्य तो है पर बिखरा जनसमूह साथ नहीं देता। यह एक पीड़ा है जो सब देशवासियों के मन को द्रवित करती है। बहरहाल अभी देश में पांच राज्यों में चुनाव प्रक्रिया जारी है जिनमें जातिगत समीकरण बनाकर देश और समाज को बांटने का काम होता दिखाई दे रहा है।

इस विषय में मुझे रह-रहकर 2014 लोकसभा चुनाव के दौरान पाकिस्तानी न्यूज रूम में बैठे उनके राजनैतिक विचारक जफर हिलाली की बात याद आती कि मोदी को रोकना है तो वहां के अन्य राजनैतिक दलों को हिन्दुओं को जात-पात में बाँट देना चाहिए। हालाँकि मुझे वर्तमान राजनीति से इतना लगाव नहीं है किन्तु मैं हतप्रभ था कि शत्रु हमारी कमजोरी से किस कदर वाकिफ है। अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में हमेशा की तरह मुस्लिम वोटों को लेकर राजनीतिक दलों में जबरदस्त रस्साकशी जारी है। सवाल यह उठ रहा है कि मुसलमानों का वोट किसकी झोली में जाएगा या फिर कई पार्टियों में बंट जाएगा? इसलिए सभी राजनैतिक दल अपनी-अपनी हैसियत से बढ़कर खुद को मुस्लिम हितैषी साबित करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि ऐसे में कोई पार्टी हिन्दू हितैषी होने की बात करे भी तो मीडिया और तथाकथित सैकुलर पार्टियाँ उस पर साम्प्रदायिक होने का आरोप जड़कर बहिष्कार करने की कोशिश करती हैं।

खैर तथाकथित धर्मनिपेक्ष पार्टियाँ खुद जाट-मुस्लिम, दलित-मुस्लिम, यादव-मुस्लिम तो कोई गुज्जर या राजपूत या फिर ब्राहमण मुस्लिम समीकरण बनाने में जुटी है। इन सारे जातीय समीकरणों को देखकर मन में टीस अवश्य उठती है कि हिन्दू-मुस्लिम समीकरण की बात तो कोई नहीं कर रहा तो क्या देश में हिन्दू खत्म हो गये? या सब लोग सत्ता स्वार्थ में जातियों में बंटकर रह गये? यदि ऐसा है तो फिर नई गुलामी की आदत अभी से डालनी होगी! इतिहास गवाह रहा है कि कुछ लोगों ने सत्ता के पायों को मजबूत रखने के लिए सदैव राष्ट्रवाद को कमजोर करने के वे सभी तरीके अपनाएं हैं जो राष्ट्र के हित में नहीं थे। अंग्रेजों के जाने के बाद आजाद भारत में लोकतंत्र प्रारम्भ हुआ। लेकिन राजनेताओं ने अपने व्यक्तिगत सुख और महत्वकांक्षी जीवन के लिए इसे जातितंत्र बना डाला। यदि गौर करें तो देश पर जातियों का ही प्रभुत्व दिखाई देता है न कि धर्म का। आखिर क्या कारण है कि मुस्लिम एक राष्ट्र का रूप मान लिया गया और हिन्दू एक साम्प्रदायिक मज़हब?

जब देश आजाद हुआ तो भारत के पास अपनी विश्व कल्याणकारी संस्कृति और अपना धर्म था। हमारे पास जो था वह अन्य देशों के पास नहीं था। लेकिन दु:ख की बात यह है कि जातिवाद से निकले नेताओं ने इन चीजों को सहेजने के बजाय उनको नष्ट किया। मामला सिर्फ चुनाव तक सीमित रहता तो भी कोई बड़ी बात नहीं थी लेकिन जिस तरह जातिवाद सामाजिक स्तर पर फैल रहा है वह आने वाले दिनों में मीठे स्वर में लिपटे इस राष्ट्र को पीड़ा की एक कराह में बदल देगा। मुगल शासन, अंग्रेजी शासन से मुक्ति के लिए क्या ऐसी ही आजादी के लिए करोड़ों देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुतियां इसलिए दी थीं कि इतनी कुर्बानियां देने के पश्चात् भी सत्तासीन नेता भारतमाता के साथ धोखा करेंगे? देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज को जितना अपमानित इस देश में किया गया उतना शायद ही किसी अन्य देश में किया गया हो। हिन्दू समाज की दर्दनाक उपेक्षा और प्रताड़ना की गई। इसे जाति में इस तरह विभाजित कर दिया कि एक देश एक समाज के चीथड़े उड़ा दिए। वोट के लिए राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता का दांव इस तरह खेला कि प्रजातंत्र मात्र भ्रम बनकर रह गया। क्योंकि प्रजा जिस तंत्र को चलाती है, उसे प्रजातंत्र कहते हैं, लेकिन यहां इसके उलट हो रहा है। प्रजा तो सिर्फ एक बार वोट दे देती है, उसके बाद तो पांच साल देश और हमारे लोगों को ये नेता चलाते हैं। क्या कोई बता सकता है कि देश में लोकतंत्र है या जाति तंत्र?

''अजब जुनून है इस दौर के नेताओं का तू धर्म के लिए मर गया तो तुझे फिर जाति के नाम पर जला कर मारेंगे।''

- सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

इस्लामिक शरणार्थी या षडयन्त्र?

....अभी हाल ही में अमेरिका के नवनियुक्त राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा सीरिया समेत सात मुस्लिम देशों के नागरिकों पर प्रतिबंध लगाया गया जिसकी अमेरिकी विपक्ष समेत समस्त विश्व के उदारवादियों द्वारा आलोचना की गयी। ट्रम्प के इस कदम की आलोचना करते हुए कनाडा द्वारा अपनी सीमा मुस्लिम शरणार्थियों के लिए खोली गयी। हमें नहीं पता कि इसमें कनाडा का क्या हित है पर समय रहते विश्व समुदाय को सोचना होगा कि आखिर क्यों अरब देश सिर्फ सुन्नी हितों की रक्षा पर बनाई रणनीति पर चल रहे हैं और क्यों दूसरी ओर शिया बहुल ईरान, शिया गुटों के समर्थन की नीति पर चल रहा है? आखिर यूरोप और भारत में एक मुस्लिम को कुछ शिकायत होने पर एक इस्लाम की बात करने वाले मुसलमान खाड़ी देशों के इस दोहरे रवैये पर खामोश क्यों रहते हैं? इस तरह के इन हितों की पैरवी करने वालों के बीच टकराव से सवाल खड़ा हो जाता है कि ये शरणार्थी संकट है या षड्यंत्र?...

शरणार्थी समस्या किसी भी देश के लिए आबादी आक्रमण के समान है, जिसमें लोग हथियारों के बजाय आंसू लेकर घुसते हैं। आज भारत समेत पूरा विश्व शरणार्थी संकट से जूझ रहा है, इस कड़ी में सीरिया, सूडान, बांग्लादेश, इराक और म्यांमार बड़े शरणार्थी निर्यातक देश तो भारत, कनाडा, जर्मनी समेत यूरोप के बड़े भूभाग के कई देश शरणार्थी आयातक बनते जा रहे है। संकट के इस समय में विश्व के उदारवादी नेताओं को समस्या तो दिखाई दे रही है लेकिन आने वाला खतरा इससे उठने वाला खतरा कोई नहीं देख रहा है। यदि इस विषय पर थोड़ी देर मानवीय दृष्टिकोण किनारे पर रख दिया जाये तो इस कथन को कोई नहीं नकार सकता कि धर्म और राजनीति इस्लाम रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। यदि मुसलमान अपने धर्मप्रेरित राजनैतिक उद्देश्यों के लिये इन देशों में घुसपैठ कर रहे हैं तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि इस्लाम वस्तुत: प्रारम्भ से ही धर्म की आड़ में एक राजनैतिक आन्दोलन रहा है।

साल 1990 में इराक ने जब कुवैत पर हमला किया था तब कुवैत के हजारों विस्थापितों को पनाह देने के लिए कई दूसरे खाड़ी देश आगे आए थे। लेकिन बीते दशकों के बाद यह कहानी उलट हो गयी। पिछले कुछ समय से सीरिया से निकले एक भी शरणार्थी को पनाह देने के लिए आर्थिक रूप से सम्पन्न कतर, कुवैत, बहरीन, सउदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात आगे नहीं आये। जबकि सउदी अरब जर्मनी में गये शरणार्थियों को मस्जिदों के लिए तो धन देने को तैयार है लेकिन उन्हें अपनाने को तैयार नहीं।

अभी हाल ही में अमेरिका के नवनियुक्त राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा सीरिया समेत सात मुस्लिम देशों के नागरिकों पर प्रतिबंध लगाया गया जिसकी अमेरिकी विपक्ष समेत समस्त विश्व के उदारवादियों द्वारा आलोचना की गयी। ट्रम्प के इस कदम की आलोचना करते हुए कनाडा द्वारा अपनी सीमा मुस्लिम शरणार्थियों के लिए खोली गयी। हमें नहीं पता कि इसमें कनाडा का क्या हित है पर समय रहते विश्व समुदाय को सोचना होगा कि आखिर क्यों अरब देश सिर्फ सुन्नी हितों की रक्षा पर बनाई रणनीति पर चल रहे हैं और क्यों दूसरी ओर शिया बहुल ईरान, शिया गुटों के समर्थन की नीति पर चल रहा है? आखिर यूरोप और भारत में एक मुस्लिम को कुछ शिकायत होने पर एक इस्लाम की बात करने वाले मुसलमान खाड़ी देशों के इस दोहरे रवैये पर खामोश क्यों रहते हैं? इस तरह के इन हितों की पैरवी करने वालों के बीच टकराव से सवाल खड़ा हो जाता है कि ये शरणार्थी संकट है या षड्यंत्र? इस समस्या से उत्पन्न खतरे को जब तक नहीं भांपा जा सकता तब तक पूरा विश्व अपनी आँखे ऊपर कर आने वाले खतरे को नहीं देखेगा। इस मामले से एक सवाल यह भी खड़ा होता है कि पूरे विश्व में फैल रहे इस्लामिक शरणार्थी अपने लिए सुरक्षित क्षेत्र तलाश रहे हैं या मज़हब के लिए राजनैतिक क्षेत्रफल?

यदि इतिहास पर नजर डाली जाये तो मुस्लिम शरणार्थियों का यह नया युग नहीं है। प्राचीन भारत का इतिहास इसके काफी घाव समेटे हुए है। राजा दाहिर ने अपने महल में इमाम हुसैन के अनुयायी मुहम्मद बिन अल्लाफी को उनके समर्थकों समेत शरण दी थी। फलस्वरूप जिसका खामियाजा भारत को सदियों तक भुगतना पड़ा था। अब एक बार फिर बांग्लादेश विश्व के उन सबसे बड़े देशों में है जो लगातार शरणार्थियों को पैदा कर रहा है। इसका खामियाजा भारत को भुगतना पड़ रहा है। बांग्लादेश की ओर से जारी अनियंत्रित और अवैध घुसपैठ ने पिछले कुछ दशकों से भारत के खिलाफ जनसांख्यिकीय हमले का रूप धारण कर लिया है।

इस प्रसंग में देखें तो स्वयं बांग्लादेश ने 1,92,274 रोहिंगा मुस्लिमों को अपने देश से निकाल बाहर किया। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र की अवमानना कर म्यांमार जैसे छोटे देश ने भी अपने यहाँ से हजारों रोहिंगा मुस्लिमों को बाहर किया जिन्हें भारत की ओर से शरण देते हुए जम्मू व दिल्ली में बसाया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार प्रांरभिक अनुमान के अनुसार देश में लगभग 1.3 लाख रोहिंगा मुसलमान मौजूद है। चिंता की बात ये भी है कि रोहिंगा मुसलमानों की संख्या जम्मू में तेजी से बढ़ रही है और यह लोग कश्मीरी लड़कियों से शादी करके जिस तरह से कश्मीर में बस रहे हैं, वह आगे चलकर खतरनाक साबित हो सकता है।

ऐसी स्थिति में शरणार्थी समस्या कितनी जटिल, भयानक और खतरनाक है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। जब समस्या बड़ी, विकराल और खतरनाक होती है तब उसके निदान, उसके समाधान के तरीके छोटे नहीं होने चाहिए बल्कि गंभीर होने चाहिए। उसके समाधान के तरीके कोई तत्कालिकता में नहीं खोजे जाने चाहिए बल्कि दीर्घकालिकता में खोजे जाने चाहिए। तात्कालिकता व भावनात्मकता में खोजे गए समाधान टिकाऊ नहीं होते हैं। मुस्लिम शरणार्थियों की आबादी के आने से शरण देने वाले देशों को कितनी भयंकर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा यह अभी सिर्फ अंदाजा लगाया जा सकता है। आज भारत और यूरोप में दो तरह के शरणार्थी आ रहे हैं- एक वे जो पीड़ित हैं और दूसरे वे हैं जो कट्टरपंथी हैं। जो अपने लिए जगह तलाश कर रहे हैं। एक के पास आंसू है तो दूसरे के पास हिंसक विचाधारा। बस उदारवादी विश्व समुदाय को अब यह भेद समझना होगा कि यह वाकई संकट है या षड्यंत्र?

-राजीव चौधरी

बोध कथा

मांगना है जो कुछ खुदा से मांग

बादशाह अकबर एक दिन जंगल में आखेट कर रहे थे। भटककर रास्ता भूल गये। देर हो गई तो प्यास और भूख सताने लगी। ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे प्राण होठों पर आ गये हों। तभी एक खेत देखा उन्होंने। उसके किनारे पर एक किसान खड़ा था। किसान के पास आकर बोले-''तुम्हारे पास कुछ खाने को है?''

किसान ने कहा -''क्यों नहीं, आओ बैठो!'' और बादशाह को उसने अपने पास की रूखी-सूखी रोटी खिला दी; दूर से लाकर पानी भी पिला दिया। खा-पीकर बादशाह प्रसन्न हुआ; किसान से बोला-''तुम क्या काम करते हो?''

किसान ने कहा-''खेती-बाड़ी करता हूँ, बहुत कठिनता से जीवन-निर्वाह होता है।''

अकबर ने कहा-''सुनो! मैं हूं भारत का बादशाह। कभी आवश्यकता पड़े तो मेरे पास आगरा आना।'' यह कहकर वह चला गया।

तब कई वर्ष बीत गये। एक बार वर्षा न हुई। किसान का खेत सूख गया। उसने सोचा-बादशाह के पास चलता हूँ, उससे कुछ मदद माँगूँगा। वह अपने गाँव से चला और राजधानी में पहुँचा। देखा, बादशाह की सवारी जा रही है। बहुत बड़ा लाव-लश्कर उसके साथ है। बादशाह हाथी पर बैठा है। किसान ने देखते ही आवाज़ दी-''अकबरा...ओ अकबरा!''

सुनने वाले आश्चर्यचकित रह गये कि यह कौन असभ्य आ गया? किसी ने कहा-''इसका सिर काट दो! यह असभ्य है!''

अकबर ने भी इस आवाज़ को सुना। दूर से इसको देखा, पहचान लिया। उसे अपने पास बुलाया। हाथी पर अपने पास बैठा लिया। महल में पहुँचा तो नौकरों को आज्ञा दी कि 'यह मेरे ही कमरे में सोयेगा। इसने मेरी जान बचाई थी। मेरे कमरे में इसके लिए पलँग लगा दो।' रात को अपने साथ ही खाना खिलाया। उसके सो जाने पर सोया।

प्रात:काल किसान उठा तो देखा कि बादशाह एक कपड़ा बिछाकर उसपर बैठे हैं। घुटने टेककर, हाथ फैलाकर, पता नहीं किससे क्या माँग रहे हैं। बादशाह नमाज़ पढ़ रहा था। निवृत्त हुआ तो किसान ने पूछा-''यह तुम क्या करते थे?''

बादशाह ने कहा -''आशीर्वाद माँगता था।''

किसान ने कहा -''किससे?''

बादशाह ने कहा - ''भगवान् से?''

किसान ने कहा - ''अच्छा।'' और अपनी लाठी उठाकर चल पड़ा।

बादशाह ने कहा - ''अरे तुम कहाँ जाते हो? यह तो बताओ कि तुम किसलिए आए थे?''

किसान ने कहा-''बादशाह! मैं आया था तुमसे मदद माँगने, परन्तु यहाँ आकर देखा कि तुम भी माँगते हो। उसी से मैं भी माँग लूँगा। तुम स्वयं भिखारी हो, तुमसे क्या माँगूँगा मैं!''

ऐसा अटल विश्वास जिसके हृदय में है, वही परमात्मा की उपासना का अधिकारी है।

'मीर' बन्दों से काम कब निकला।
माँगना है जो कुछ ख़ुदा से माँग।।

- साभार -
बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

शिवरात्रि बोधरात्रि स्यात्

इस नव वर्ष (विक्रमी संवत्) से ठीक एक मास पहले एक ऐसा पर्व आ रहा है, जिसकी हम सभी जन बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते है, वह पर्व है शिवरात्रि। शिवरात्रि शब्द से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ''शिवस्य रात्री शिवरात्रि'' अर्थात् शिव की रात। शिव का अर्थ होता है कल्याण करने वाला। अतः इस दिवस का अर्थ होता है- कल्याण करने वाली रात्री। पौराणिक मान्याताओं के अनुसार इस दिवस की रात्रि को शिव के दर्शन होते है। प्रचलित मान्यतानुसार शिवलिंग की पूजार्चना से हम मुक्ति पा लेते है। यही शिव जी सृष्टिकर्ता के रूप में भी स्वीकार किए जाते है। शिव जी को प्रसन्न करने के लिए शिवरात्रि के अवसर पर इस मूर्तिमान शिव जी पूजार्चना की जाती है। भला कोई पूछे कि जिसने इस सृष्टि की रचना की है, उसे तो किसी ने देखा ही नहीं है पुनः उसकी प्रतिमा अर्थात् उसकी मूर्ति कैसे हो सकती है? उस सृष्टिकर्ता का कोई रूप है ही नहीं पुनः उसकी रूपाकृति कैसे तैयार हो गई?

हम सत्य के यथार्थ स्वरूप को भूल रहे हैं। लोग कहते है कि शिवरात्रि को शिव के दर्शन होते है। हां वास्तव में इस रात्री को शिव के दर्शन होते है, परन्तु वह कोई मूर्तिमान शिव नहीं है अपितु एक ऐसा ज्ञान जिससे यथार्थ शिव का ज्ञान हो सके। इसी शिवरात्रि को एक बालक ने सद्ज्ञान को पाकर सच्चे शिव को जानने के लिए अपने घर-बार, सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया। स्वयं अमृतपथ को पाकर दूसरों को भी कल्याणकारी मार्ग दिखाया। यह शिवरात्रि बड़ी ही कल्याणकारिणी है। इसी रात्रि को बोधरात्रि भी कहा जाता है। इस पर्व की महिमा को आचार्य मेधाव्रत जी ने इस प्रकार निरूपित किया है -

कियत्यो नो जाता जगति शिवरात्र्यो ननु परा,
कियद्भिर्नाकारि प्रथितशिवरात्रिव्रतविधिः।
परं सा काप्यासीद् व्रतिवर! जगन्मंगलकरी,
सवित्री ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते!!

इस दिवस एक सच्चे शिवभक्त का निर्माण हुआ जिसका नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती था। इनका जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता जी कट्टर पौराणिक एवं पक्के शिवभक्त थे। जब मूलशंकर (पूर्वनाम) १४ वर्ष के थे तब पिता जी ने शिव की कपोल कल्पित कथाएं सुनाकर मूर्तिमान शिव का व्रत रखने का आदेश दिया।

मूलशंकर ने बड़ी श्रध्दा और भक्ति के साथ शिवरात्रि के व्रत का अनुष्ठान किया। आज उन्हें बड़ी प्रसन्नता हो रही थी कि उन्हें रात्रि को साक्षात् शिव के दर्शन होगे। माता जी के लाख मना करने पर भी पिता जी अपने साथ मूलशंकर को मन्दिर में लेकर गये। मूलशंकर जी ने भूखें रहकर अर्द्धरात्री का समय व्यतीत किया। वह प्रतिक्षण यही सोच रहे थे कि कब शिव के दर्शन हों, उस समय तक सभी सो चुके थे। उस समय यदि कोई ज्योति उस मन्दिर को प्रकाशित कर रही थी तो वह उस दिव्यात्मा दयानन्द की श्रद्धा रूपी ज्योति थी। जैसे कोई लक्ष्य का धुनी अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिक्षण जागरुक रहता है वैसे ही दयानन्द प्रतिक्षण यही विचार करता रहा कि कब वह पल आये जब उस देवों के देव महादेव शिव के दर्शन हो। इस प्रकार के विचार चल रहे थे तभी अचानक एक अजीब-सी घटना घटित होती है कि दो-तीन चूहे शिवलिंग पर आकर उस मूर्ति पर चढ़ा हुआ चढ़ावा खा रहे थे व मल-मूत्र का त्याग कर रहे थे। तभी वह दिव्यात्मा अपने आप से विचार करता है कि - पिता जी ने शिव को सम्पूर्ण सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता व संहर्ता बताया था। यह तो सम्पूर्ण संसार के सम्पूर्ण क्लेशों को हरण करने वाला है तो फिर यह क्यों अपने भोज्य की रक्षा नहीं कर रहा? क्यों अपनी रक्षा नहीं कर रहा? यदि यह अपनी रक्षा नहीं कर सकता है तो फिर हमारी कैसे करेगा? इस जिज्ञासा को वह कुछ क्षण तो अपने में रोक सका परन्तु जैसे किसी घड़े में सामर्थ्य से अधिक पानी भर दिया जाए तो वह बहार निकलने लगता है इसीप्रकार वह अपनी वेदना को अपने पिता के सम्मुख व्यक्त करते हुए शिव के विषय में अनेकों प्रश्नों को करता है परन्तु जो पिताजी ने समाधान दिये उससे वह संतुष्ट नहीं हुआ और वह यह कह कर चल दिया कि

मैं उस सच्चे शिव को खोज कर ही रहूंगा और सच्चे शिव की खोज में सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण करने निकल पड़ा। वास्तव में उस सच्चे शिव के दर्शन कर संसार को उस मार्ग को दिखाया, जिस मार्ग से मोक्ष की प्राप्ति हो सके। उस दिन की रात्रि हम सबके लिए एक वरदान के रूप में प्राप्त हुई थी। यदि वह रात न आती तो शायद हम आज भी अन्धकार के गहरे गर्त में ही फसे हुए पड़े रहते। जिन वेदों को हम कर्मकाण्ड की पुस्तक समझते हैं, उन्हें लोकोपयोगी सिध्द कर इस दिवस की रात्रि के यश को द्विगुणित कर दिया। इसी विषय में कविवर मेधाव्रत जी कहते है कि -

परब्रह्मप्राप्तौ विमलनिगमाप्तौ सहचरी,
मुनेरन्तर्नेत्राम्बुजदल कुलोल्लासनकरी।
तमोरक्षोहन्त्री सुकृतपदनेत्री तनुभृताम्,
सदा शैवी रात्री परमसुखदात्री भवतु नः।।

आओ! हम सब मिलकर इस बोधोत्सव पर बोध के यथार्थ स्वरूप को प्राप्त कर अपने में धारण करें क्योंकि आज हम जानते तो सब कुछ है कि क्या सही है अथवा क्या गलत है? पर जो सही है, उसे करते ही नहीं है।

जिस प्रकार यह रात्रि बालक मूलशंकर के लिए आनन्द का दिग्दर्शन कराकर महर्षि दयानन्द सरस्वती का महान् रूप प्रदान कराती है, वैसे ही यह रात्रि हम सब के लिए ज्ञान का प्रकाश कराने वाली हो। मूर्तिपूजा जैनियों से प्रारम्भ हुई है। ये रात्रि हमें इस ज्ञान का बोध कराये कि संसार का कर्ता अर्थात् ईश्वर कोई मूर्ति रूप नहीं है। इस संसार का सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र है, इन गुणों से युक्त ही ईश्वर है, इससे अन्य कोई भी ईश्वर नहीं हो सकता।

आवश्यकता है कि हम उस देव दयानन्द के पथ का अनुसरण कर शिवरात्रि के यथार्थ स्वरूप को अपनाकर इस दिवस को सार्थक करें।

आज हमारे समाज से स्वाध्याय की परम्परा प्रायः विलुप्त होती जा रही है, जिससे हमारा ज्ञानस्तर अधोगति की ओर गति कर रहा है। हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि स्वाध्याय सदैव सत्यासत्य का ज्ञान करानेहारा होता है। सत्शास्त्रों का स्वाध्याय करके ही हम विवेकवान् बन सकेंगे। अतः इस बोधोत्सव के पर्व से संकल्पित हों कि हम नित्यप्रति अपनी दिनचर्या में स्वाध्याय को प्रमुख स्थान दें।

यह शिवरात्रि का पर्व आपके संकल्प को सफल बनाये, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

- शिवदेव आर्य
आचार्य, गुरुकुल पौंधा,
देहरादून (उत्तराखण्ड)

हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज

हे आर्य समाज! आर्य समाज!
हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज!
हे वैदिक संस्कृति के साज।
तूने किये महान् ही काज।।1।।

तेरे सिद्धान्तों से थर्राते,
टोनेबाज व धोखेबाज।
मैं इसीलिए तो कहता हूं,
तू ही है समाज अधिराज।।2।।

तू है रक्षक कन्याओं का,
तू है रक्षक अबलाओं का।
कन्याओं हेतु आर्य समाज!
देश में किया शिक्षा का राज।।3।।

हिन्दी भाषा को तूने ही,
संज्ञा दी आर्य भाषा की।
है प्रतिष्ठित जो देश में आज,
पहने राष्ट्र-भाषा का ताज।।4।।

तूने दिये हिन्दी के वक्ता,
प्रकाशवीर जैसे प्रवक्ता।
भाषण की अनुपम आवाज,
कहां सुनेंगे सर्वजन आज।।5।।

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का,
काज है तेरा महा सुकाज।
इसी से तो होगा पुनः यहां,
चक्रवर्ती आर्यों का राज।।6।।

हो यहां सात्विकता का राज,
पुनः पाएं कृष्ण योगिराज,
हो सुखमय यह लोकराज,
कर रहा प्रयत्न आर्य समाज।।7।।

-प्रियवीर हेमाईन, नई दिल्ली

हास्य-व्यंग्य

इस्तीफा मांगो तो सही!

– डॉ. पूर्ण सिंह डबास

इस देश में ही नहीं बल्कि पूरी धरती पर मांगने का रिवाज बहुत पुराना है। भिक्षा, भिख्या या भीख और भिक्षु, भिक्षुक, भिक्खु, भिक्षार्थी या भिखारी तथा 'मंगता' जैसे शब्द हमारी मांगने की उज्ज्वल परंपरा के गौरव पूर्ण प्रतीक कहे जा सकते हैं। मांगने वालों के विशाल दायरे को देखकर ऐसा लगता है कि आदमी का जन्म मांगने के लिए ही हुआ है। आदमी की मांगें माता-पिता और भाई-बंधुओं से लेकर पास-पड़ौस, सरकार और भगवान तक फैली हुई हैं। मांगने वालों के हौसले इतने बुलंद हो चुके हैं कि वे अजनबियों से मांगने में भी नहीं चूकते। ये मांगें होती भी हैं तरह-तरह की। जैसे, कोई ग़रीबी का मारा धन मांग रहा है, कोई बिना गरीबी के ही उसकी शौकिया याचना कर रहा है। कोई संतान मांग रहा है और फिर कुछ साल के बाद उससे विरक्ति और मुक्ति मांग रहा है। कोई जिन्दगी भर धन की हाय-हाय में लगा रहने के बाद, सेहत मांग रहा है तो कोई घपले करके चैन की नींद मांग रहा है। कोई गृहस्थी बसाने के लिए एक अदद बीवी मांग रहा है तो कोई तंग होकर उससे छुटकारा मांग रहा है। कोई अपनी पदोन्नति मांग रहा है और साथ-साथ अपने किसी सहयोगी की बर्खास्तगी। कोई अपने विरोधी का परलोक-प्रस्थान मांग रहा है तो कोई पड़ौसी का व्यापार चौपट हो जाने की याचना कर रहा है।

इधर कुछ वर्षों से मंगतों का एक नया वर्ग उभर कर सामने आया है। ये लोग धन-दौलत, सेहत, पद और बीवी जैसी कोई चीज नहीं मांगते। ये चीजें पहले से ही इनके कब्जे में हैं। हाँ, एक आध के पास बीवी जरूर नहीं है पर इसके लिए उन्होंने कोई दूसरा जुगाड़ कर रखा है। इसके अतिरिक्त इनकी जिन्दगी के लिए जरूरी- बेइमानी, भ्रष्टाचार, घूस-खोरी, छल-कपट तथा घपलों-घोटालों- की भी इनके पास कोई कमी नहीं है। हाँ, ईमानदारी, जनहित, शिष्टाचार, सदाचार तथा देश प्रेम आदि इनके पास बेशक मौजूद नहीं हैं लेकिन इन्हें, अपने जीवन में इनकी जरूरत भी नहीं पड़ती। उलटे ये तो इनके खाते-पीते जीवन की बाधाएँ हैं। ये चीजें इनके भाषणों का विषय तो हो सकती हैं लेकिन आचरण का नहीं।

इस वर्ग के सदस्य कुछ नई और मॉडर्न किस्म की चीजें मांगते हैं। जैसे, कोई टिकट मांगता है, टिकट मिल जाने पर वोट मांगता है और फिर चुनाव में जीत मांगता है। विजयी हो जाने पर मंत्री-पद मांगता है और इसे झपटने में फेल हो जाने पर कोई ऐसी नियुक्ति मांगता है जिससे लालबत्ती लगी एक कार का इंतजाम हो जाए। इनमें कुछ डीलक्स किस्म के याचक भी हैं जो एक बिल्कुल नई किस्म की चीज मांगते हैं जिसे इस्तीफा कहा जाता है। कोई इनसे पूछने वाला नहीं है कि इस्तीफे का क्या करोगे? यह कोई खाने-पीने की चीज तो है नहीं, इसे चाट भी नहीं सकते। पहनने-ओढ़ने के काम भी नहीं आ सकती। बिक भी नहीं सकती कि कुछ कमाई हो जाए। फिर क्यों इसके पीछे पड़े हो?

दरअसल इस्तीफों की यह मांग, घोर कलियुगी मांग है। सतुयुग से लेकर द्वापर काल तक और मोन-जो-दड़ो व हड़प्पा से लेकर धौलावीरा की खुदाई तक में इस्तीफा मांगने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। हमारे पूर्वजों का काम बिना इस्तीफा मांगे ठीक-ठीक चलता रहा है। उन के ऊपर कितने ही संकट आए, घोर आपदाएँ आई लेकिन उन्होंने किसी से कभी इस्तीफा नहीं मांगा। वे जानते थे कि यह किसी काम का नहीं होता। सतुयुग में रामचन्द्र जी महाराज पर क्या कम मुसीबतें आई थीं? राजगद्दी की जगह उन्हें चौदह साल का बनवास पकड़ा दिया गया जिसे आज की भाषा में उम्र कैद कहा जा सकता है। इसके बावजूद उन्होंने अपनी माताश्री कैकेयी और पिताश्री दशरथ से इस्तीफा नहीं मांगा। चुपचाप जंगल में चले गए। वहां पर, जैसा कि हमारे राज नेता कहते है, 'एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना' में, राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने रावण की बहन शूर्पणखा का नाक काट दिया लेकिन फिर भी रावण ने लक्ष्मण से इस्तीफा नहीं मांगा। यह दूसरी बात है कि एक दिन वह मौका देखकर लक्ष्मण के बड़े भाई राम की पत्नी को उठा ले गया। यह सब होने पर राम ने भी रावण से इस्तीफा नहीं मांगा। त्रेता और द्वापर में भी हालत ज्यों की त्यों रही। महाभारत गवाह है कि युधिष्ठिर ने जुआ नाम के एक मनोरंजनक खेल में द्रौपदी को दाँव पर लगा दिया और हार बैठा लेकिन किसी भी पाण्डव बंधु ने युधिष्ठिर से इस्तीफा नहीं मांगा। द्रौपदी का चीर हरण होने के बावजूद, मौका-ए-वारदात पर मौजूद, भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य से भी इस्तीफा नहीं मांगा गया। हमारी ऐसी उज्ज्वल परम्परा के बावजूद आज पता नहीं ये इस्तीफा-याचक कहाँ से पैदा हो गए हैं।

यह बड़े दुख की बात है कि पूरा जोर लगाने के बावजूद बेचारे इस्तीफा याचकों को इस्तीफे नहीं मिल रहे हैं। इस देश में कई करोड़ ऐसे लोग हैं जिनकी इस्तीफा देने की हैसियत है लेकिन किसी को भी इन याचकों पर दया नहीं आ रही। ऐसे ही याचकों और इस्तीफे वालों को लानत देते हुए कवि रहीम कई सौ वर्ष पहले कह गए थे कि वे 'नर' मर चुके हैं जो किसी से कुछ मांगने जाते हैं और उन से भी पहले, वे 'मर' गए हैं, जो मांगने वालों को 'नहीं' कह देते हैं :

रहिमन ते नर मर चुके
जे कहुँ मांगन जांहि।
उनसे पहले वे मुए
जिन मुख निकसत नांहि।।

ऐसी हालत देखकर इन इस्तीफा-याचकों के प्रति, मेरे भीतर से हमदर्दी का झरना फूट पड़ा है। मैंने तय कर लिया है कि मैं उन के लिए अपना इस्तीफा दान या कुर्बान कर दूँ। मैं कोई दानी या कुर्बानी नहीं हूँ और न ही किसी शौहरत के चक्कर में इस्तीफे की पेशकश कर रहा हूँ। इसके पीछे शुद्ध परोपकार का भाव है। मैं परमादर्णीय स्वर्गीय रहीम को विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे मुँह से **नाहि** नहीं निकलेगी। मैं न तो खुद मरूंगा और न ही इस्तीफा याचकों को मरने दूंगा।

तो, हे इस्तीफा याचकों! मेरे पास आओ और यह बताओ मैं किसी चीज का इस्तीफा दूँ? क्या है जिसे मैं त्याग दूँ और वह तुम्हारे काम आ जाए। तुम्हारी करतूतों के बावजूद, जीवन-यापन के लिए जो थोड़ी-बहुत पूंजी बचा पाया हूं क्या उससे इस्तीफा दे दूँ? तुम्हारे काले कारनामों के बावजूद जो मैं इस देश का नागरिक होने पर गर्व कर लेता हूँ क्या उससे त्यागपत्र दे दूँ? तुम्हारी बेशरम हरकतों के बाद भी अगर मुझमें सिर ऊपर उठाने के लिए जो थोड़ा-बहुत स्वाभिमान बचा है क्या उस से किनारा कर लूँ? तुम्हारी कुटिलताओं के कारण दीन-हीन बनी गृहस्थी का बोझ उठाते-उठाते जर्जरित हो गई, क्या इस काया को तिलांजलि दे दूँ। तुम्हारे घोटालों-हवालों, दलाली और आपाधापी के काले धूएँ के बावजूद मेरे लोक व्यवहार में जो थोड़ी सच्चाई बच सकी है क्या उससे इस्तीफा दे दूँ? मैं क्यों गिनती कराऊँ, तुम्हीं मुझे टटोलकर बता दो कि मेरे पास इस्तीफे के लिए क्या बचा है। तुम जो भी ढूंढ पाओगे मैं उसी का इस्तीफा तुम्हें सौंप दूंगा। तुम सफलता के रूप में उसे अपने कमरे में सजा लेना और इस्तीफा मांगने की कामयाबी पर खुश हो लेना।

इस्तीफा हाजिर है, पर मांगो तो सही!

- एम-93, साकेत,
नई दिल्ली-110017
(मो॰ 9818211771)

अतीत के झारोखे से

हमारे भाई, हमारे अपने

आज देश में चारों तरफ हिन्दू धर्म के ध्वजवाहक चीख-चीख कर कह रहे हैं कि मतान्तरण पर सरकार तुरन्त रोक लगाए। इन लोगों की करुण पुकार न तो सरकार सुन रही है और न ही वंचित वर्ग के लोग। न सुनने का मुख्य कारण क्या है, इस पर क्या कभी इन लोगों ने खुले मन से विचार करने का मन बनाया है? इतिहास इस बात का साक्षी कि इन वंचित लोगों के साथ कथित हिन्दुओं ने बुरा व्यवहार किया है। मन्दिरों के निर्माण आदि में इन लोगों का सहयोग होने के बावजूद मन्दिरों में इनका प्रवेश वर्जित था। कहीं-कहीं वेद के पढ़ने-सुनने पर प्रतिबंध आदि-आदि था।

मुझे याद है, आगरा जिले के गांव पनवाड़ी में हरिजनों की बारात नहीं निकलने दी गयी, क्योंकि दूल्हा घोड़ी पर सवार था। हरियाणा के रेवाड़ी जिले के कालड़बात गांव में हरिजनों की पिटाई इसलिए की गयी कि सभी अच्छे कपड़े पहन कर मेले में जा रहे थे। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गांव में हरिजन महिलाओं की बुरी तरह पिटाई इसलिए की गयी कि उन्होंने नंगा नाचने से मना कर दिया। फतेहपुर जिले के धर्मपुर में धनराज हरिजन को इसलिए जिन्दा जला दिया गया कि उसने अपनी पत्नी कुच्ची देवी को सामंतों की हवस शान्त करने के लिए उनके पास भेजने से मना कर दिया था। इन सारी बातों को झेलकर भी वंचित हिन्दू धर्म को अपनाए हुए हैं। फिर भी ये घृणा के पात्र बने हुए हैं। हां, सौभाग्य की बात है कि कुछ वर्षो से आर्यसमाज, रा. स्व. संघ व विश्व हिन्दू परिषद जैसी संस्थाओं का इस ओर ध्यान गया है और उनकी सेवा की जा रही है। समाधान इसमें है कि हम इस चुनौती को किस प्रकार से लेते हैं? हम प्रण करें कि स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. हेडगेवार, श्री गुरु जी तथा वीर सावरकर के बताए रास्ते पर चलकर वंचितों को हृदय से अपना समझें। उन्हें यह आभास न हो कि हम भारत में रहते हुए भी दूसरी श्रेणी के नागरिक हैं, तभी हम मतान्तरण को रोकने में सफल हो सकेंगे।

- मामचन्द रिवाड़िया,
संस्थापक महामंत्री आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027

Continue from last issue :-

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Homage to the Ruler

"O Ruler, you are the swan seated in purity; the wind seated in the midspace; the priest seated on the sacrificial altar; the guest seated in each house. You rule over the land, the waters, the mountains and the sky. May you be seated in the hearts of the people as you are the truth and executer of eternal law."

"O Ruler, you are the producer of wealth. You are the source of inspiration to the house-holders of the land. You are the promoter of vegetation. You are the preacher of divine speech. O dispenser of justice, may you be crowned to discharge your duties."

हँसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत सद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋृऽतजाऽअद्रिजाऽऋतं बृहत्।।(Yv. X.24)

सविता त्वा सवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठयाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।। (Yv. IX.39)

Hamsah Sucisadvasurantariksa sadhhota vedisadatithirduronasat.

nrsadvarasadrtasadvyomasadabja goja rtaja adrija rtam brhat..

Savita tva savanam suvatamagnirgrh apatinam somo vanaspatinam.

brhaspatirvaca indro jyaisthyaya rudrah pasubhyo mitrah satyo varuno dharmapatinam..

True Sons of the Soil

The Earth is our mother; we are her sons. The verse says : "All those that take birth on the earth cannot be considered as the sons of the earth. Those who have love for humanity and act accordingly are true sons of the soil. They are ever conscious of upholding the honour and ideal of mankind".

The Earth is Aditi because it is indivisible. But we divide and subdivide the earth and fight among ourselves. There is nothing wrong in demarcating the land to fulfil the aspirations of the cultural and linguistic groups of people for sake of national objectives. But conflict arises when one group out of ego, greed and violence hinders the progress of a neighbouring one to establish superiority. Thus the earth as a whole is defamed.

A son of the earth must always work for the welfare of all. Another name given to the earth is Adina (not poor or helpless). Because the earth always gives birth to the heroic souls, she can never be considered poor or helpless. She, truly, is the cause of birth and nourishment of heroic sons. These brave ones, show respect to their moherland as well as to Mother Earth. They guide the treacherous and cunning people to noble paths through frienship, love and benevolence. They are the true sons of the soil. On the contrary, the Asuras, the vicious ones tread on the path of selfish interest. They are, therefore, the great enemies of the earth.

ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्। (Yv. III.33)

Te hi putraso aditeh pra jivase martyaya.

jyotiryacchantyajasram..

A National Anthem

A verse in Yajurveda refers to the aspiration of the people of a nation or a fed- s well, 'May we be ever watchful and vigilant in the Rastra (XI. 23)', May you remain. O ruler, firm and unyielding. 'May your Rastra never fall (XII.11)'.

Verse 22, Chapter XXII says:

"O Supreme Lord, may such persons be born to our nation rich in learning and illustrious for their sacred knowledge. May there be born brave men skilled in welfare, statesmen capable of ruling the people, men of defence, heroic and skilled archers. May there be born cows yielding abundant milk, oxen good at carrying, swift coursers. May there be born virtuous women and valorous men. May our sons and daughters be ever victorious marching gloriously in the forefront, impressive in assemblies. May we have timely rains and may our power of acquisition (Yoga) and preservation (Ksema) be always secured to us."

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम राष्टे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। (Yv. XXII.22)

A brahman brahmano brahmavarcasi jayatam a rastre rajanyah sura isavyo 'tivyadhi maharatho jayatam dogdhri dhenurvodhanadvan asuh saptih purandhiryosa jisnu rathesthah sabheyo yuvasya yajamanasya viro jayatam nikame nikame nah parjanyo varsatu phalavatyo na osadhayah pacyantam yogaksemo nah kalpatam..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ – 21

फोन पर मित्र से संवाद

गतांक से आगे....

गिरीशः – नमस्ते

गिरीश – नमो नमः

अनन्तः – ओम्। कः वदति?

अनन्त – ओम्। कौन बोल रहा है?

गिरीशः – अहं गिरीशः वदामि। मित्र! गृहे कोऽपि नास्ति किम्?

गिरीश – मैं गिरीश बोल रहा हूँ, मित्र घर में कोई नहीं है क्या?

अनन्तः – सर्वे सन्ति। पिता जपति। अम्बा यज्ञ करोति अनुजः खादति। अग्रजा मालां करोति। पितामहः दूरदर्शनं पश्यति। पितामही स्नानं करोति।

अनन्त – सभी हैं पिता जप कर रहे हैं, माँ हवन कर रही हैं, छोटा भाई खा रहा है, बड़ी बहन माला बना रही है, पितामह (दादाजी) टी.वी. देख रहे हैं, दादी स्नान कर रही हैं।

गिरीशः – त्वं किं करोषि? क्रीडसि वा?

गिरीश – तुम क्या कर रहे हो? खेल रहे हो क्या?

अनन्तः – अहं पठामि। उत्तरं लिखामि। तव अनुजौ किं कुरुतः?

अनन्त – मैं पढ़ रहा हूँ, उत्तर लिख रहा हूँ, तुम्हारे दोनों भाई क्या कर रहे हैं?

गिरीशः – मम अनुजौ शालां गच्छतः। अहं पिता च विद्यालयं गच्छावः।

गिरीश – मेरे दोनों भाई स्कूल जा रहे है। मैं और पिताजी विद्यालय जा रहे हैं।

अनन्तः – अद्य त्वमपि विद्यालयं न गच्छ?

अहमपि न गच्छामि। वयं सर्वे अद्य मैसूरुनगरं गच्छामः। मम बान्धवाः। अपि आगच्द्धन्ति।

अनन्त – आज तुम भी विद्यालय न जाओ मैं भी नहीं जा रहा हूँ, हम सब आज मैसूर जा रहे है। मेरे परिवार के लोग भी आ रहे हैं।

गिरीशः – भवतः पिता कार्यालयः न गच्छति किम्?

गिरीश – आपके पिता कार्यालय नहीं जाते क्या?

अनन्तः – अद्य मम पिता विरामं स्वीकरोति।

अनन्त – आज मेरे पिता ने अवकाश ले लिया है।

गिरीशः – अनन्तः नहि भोः अहम् आगन्तुं न शक्नोमि। भवान् गच्छतु।

गिरीश – अनन्त! मैं नहीं आ सकता, आप जाओ।

अनन्तः – पुनः मिलामः, धन्यवादः।

अनन्त – फिर मिलते हैं, धन्यवाद।

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

आयशा का अपहरण हो गया

1931 ई. की घटना होगी। निज़ाम राज्य के मुसलमानों ने शोर मचा दिया कि आर्यनेता भाई श्यामलाल ने आयशा का अपहरण कर लिया है। आयशा कौन थी? एक दलित परिवार की देवी थी, जिसका अपहरण करके मुसलमानों ने उसका नाम आयशा रख दिया। हजरत मुहम्मद साहब की प्यारी छोटी बीबी का नाम भी आयशा ही था। इसलिए मुसलमानों को यह नाम बहुत प्यारा लगता है।

दुःखी परिवार किसे सुनावे? निज़ाम राज्य में कौन सुनता है। अब ईरान, पाकिस्तान व बंगलादेश में असंख्य मुल्ला चिल्ला रहे हैं। जेलों में सड़ रहे हैं। कौन सुनता है?

दुखिया परिवार ने दीनबन्धु प्रणवीर भाई श्यामलालजी को अपनी दुःखभरी कहानी सुनाई। शीश तली पर धरकर श्याम भाई व उनके सहयोगियों ने उस देवी का पता लगा लिया। उसे बचाया। तब मुसलमानों ने शोर मचा दिया कि भाईजी ने आयशा का अपहरण कर लिया। एक निर्धन, असहाय हरिजन कुटुम्ब की लाज लूटकर जिन्हें लज्जा नहीं आई, उन लोगों ने भाई श्यामलालजी व अन्य कई आर्यो पर अभियोग चला दिया। अपहरण का यह अभियोग बहुत लम्बा चला।

आर्य नेता व आर्यवीरों को कितने कष्ट सहने पड़े। इसका स्मरण कर शरीर काँप उठता है। न जाने आर्यसमाज ने कितनी ऐसी देवियों की रक्षा की है। श्री देवीदासजी कानपुर का सारा जीवन ही इन संघर्षो में बीता है। ऐसे दिलजले आर्यवीरों का ऋण कौन चुका सकता है? आर्यसमाज का नारी–रक्षा का भी एक गौरवमय इतिहास है।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वयं सत्य का बोध प्राप्त किया और संसार को आत्मबोध, राष्ट्रबोध, सत्यबोध, परमात्यबोध और जीवन बोध कराया। उन्होंने सन्देश दिया-'उठो। जागो। अपने स्वरूप को समझो और पहिचानो। तुम परमात्मा की श्रेष्ठ सन्तान हो। अपने धर्म-कर्म को समझो।'

स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना की। जिसका उद्देश्य रखा 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' सारे जगत को श्रेष्ठ और महान बनाना है। सभी को सच्चे अर्थ में इन्सान बनाना और जीना सिखाना है। यही वेद कहता है- 'मनुर्भव' आर्य समाज कोई पंथ, मजहब या सम्प्रदाय नहीं है। आर्य समाज एक वैचारिक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। आर्य समाज सुधारवादी, बुद्धिवादी, प्रगतिशील, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन है। सच्चे अर्थ में आर्य समाज वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति-सभ्यता, धर्म और जीवन-दर्शन का उद्धारक, प्रचारक और प्रसारक है। इसके सिद्धान्त, विचार, आदर्श आदि सीधे-सच्चे व सरल हैं। इसकी विचारधारा जीवन-जगत को उलझाती नहीं है अपितु सीधा- सरल- सच्चा मार्ग दिखाती है। इसकी मान्यताओं में ढोंग-पाखण्ड अन्धविश्वास-अन्धश्रद्धा, पूजा-पाठ, चढ़ावा और गुरुडम नहीं है। इसके दस नियमों में विश्वमानवता और विश्वशान्ति की कामना और प्रार्थना है। इसके सिद्धान्तों में सत्य, वेद, विज्ञान, सृष्टिक्रम तर्क और प्रमाण हैं। ''बाबा वाक्यं प्रमाणम्'' सत्य वचन महाराज, इसमें नहीं चलता है।

आर्य समाज की मान्यताएं, सिद्धान्त, विचार और आदर्श आज के भौतिकवादी, भोगवादी, मायावी, तनाव, चिन्ता, अशान्ति और संघर्ष में जी रहे मानव को सच्ची सुख शान्ति, प्रसन्नता, नीरोगता आदि का रास्ता दिखा सकते हैं। विज्ञान, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाईल और भौतिक सुख-भोग साधनों में जी रही युवापीढ़ी को ढोंग, पाखण्ड, अन्ध श्रद्धा, अन्ध विश्वास, गुरुओं, महन्तों आदि से घृणा होने लगी है, वे आधारहीन तथा अवैज्ञानिक बातों से तंग आ रहे हैं। युवापीढ़ी वास्तविक सत्य और शान्ति की तलाश में है। उसकी जागरुकता, वैज्ञानिक सोच और सच्चे अध्यात्म की भूख-प्यास को आर्य समाज की विचारधारा ही पूर्णतया सन्तुष्ट कर सकती है क्योंकि इसके सत्य चिन्तन में खोट नहीं है। इसके सिद्धान्तों व विचारों में सत्य पूर्ण क्षमता और शक्ति है। जितने भी पंथ, मजहब, सम्प्रदाय और गुरुओं, महन्तों की गद्दियां हैं उनमें प्रश्न करने, तर्क रखने और प्रामाणिक बात करने का अधिकार नहीं है। वहां तो सीधा कहा जाता है-अपने देवी-देवताओं और गुरुओं पर श्रद्धा और विश्वास करो। वे जो कहें- उसे सिर नीचा करके स्वीकार कर लो।

मगर आर्य समाज ऐसा मानता और कहता नहीं है, उसकी स्पष्ट घोषणा है जो सत्य, वैज्ञानिक, व्यावहारिक और बुद्धिपूर्वक लगे उसे मान लो, बाकी छोड़ दो। जो पुरानी, उपयोगी, प्रेरक व महत्त्वपूर्ण बातें हैं और जो नये युग की जीवन-जगत की सुख-शान्त, प्रसन्न तथा जीवनोद्देश्य में सहायक बातें, खोजें एवं चीजें हैं उनका सदुपयोग कर लो। नये और पुराने को मिलाकर जीवन को सुन्दर एवं सुखी बना लो। यही व्यावहारिक आर्य समाज का सन्देश रहा है। जो वर्तमान में धर्म, भक्ति योग और परमात्मा के नाम पर अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम प्रदर्शन, आडम्बर और गुरुवाद बढ़ रहे हैं। भेड़ चाल में सब भागे जा रहे हैं। धर्म भक्ति और परमात्मा व्यापार व बाजार का रूप ले रहे हैं। ऐसे वातावरण में आर्य समाज की विचारधारा ही हमें सन्मार्ग दिखा सकती है। जितना आर्य समाज का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा उतना ढोंग पाखण्ड तथा अन्धविश्वास घटेगा।

प्रसन्नता है कि आप सभी भारतीय मिलकर हिन्दूधर्म, भारतीय संस्कृति और वैदिक विचारधारा को यज्ञ, भजन सत्संग तथा अन्य कार्यक्रमों के द्वारा प्रचारित, प्रसारित और बढ़ा रहे हैं। ऐसे कार्यक्रमों से ही युवापीढ़ी को संस्कार, विचार, संगति और परम्परा का ज्ञान मिलता है। युवापीढ़ी को वैदिक धर्म और भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की तत्काल आवश्यकता है। युवावर्ग में ही विचार, संस्कार विरासत तथा वसीयत आगे बढ़ती है। वेद का भी यही आदेश और उपदेश है। मातृभूमि, मातृसंस्कृति और मातृभाषा को कभी नहीं भूलना चाहिए। इनसे व्यक्ति की पहिचान व जीवन संभला रहता है। मनुष्य अपनी जड़ों तथा जीवन मूल्यों से जुड़ा रहता है।

हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि हमें वेद जैसा श्रेष्ठ ज्ञान मिला। ऋषि दयानन्द जैसा मार्ग दर्शक प्राप्त हुआ और आर्य समाज जैसी सत्यज्ञान बोधक संस्था से हमारा सम्बन्ध जुड़ा। वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे, यज्ञ परम्परा आगे बढ़ती रहे। हम सबकी यही प्रभु से कामना और प्रार्थना है -

सर्वेभवन्तुः सुखिनः।

-बी.जे. 29, शालीमार बाग, दिल्ली

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - *सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

(5,10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1

मो. 9540040339

स्मृति यज्ञ का आयोजन

पं. मानवेन्द्र शास्त्री जी की पूज्या माता जी स्वर्गीय श्रीमती रामश्री देवी जी की स्मृति में बरसी यज्ञ आर्य समाज मन्दिर सैनिक एन्क्लेव सै.-1, मोहन गार्डन, उत्तम नगर (निकट अरिहन्त चौक) में दिनांक 26 फरवरी 2017 को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य आयोजित किया जाएगा।

-पं. मानवेन्द्र शास्त्री

चारों वेदों का अंग्रेजी अनुवाद

www.ved-yog.com पर उपलब्ध। वेद, दर्शन, उपनिषद्, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के साहित्य को फ्री डाउनलोड करें। *-सतीश आर्य*

वैदिक पुरोहित चाहिए

सम्पूण वैदिक संस्कारों हेतु विद्वान, गृहस्थी पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें-

मन्त्री, आर्य समाज मन्दिर,
सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाईन,
सहारनपुर-247001 (उ.प्र.)
मो. 09358697035

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अतः उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें। **-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9650183337**

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

वैवाहिक

वधू चाहिये

24 वर्षीय, अमेरिकन बैंक, मुम्बई में उच्च पद पर कार्यरत, पूर्ण शाकाहारी, आर्य परम्परा के पालक पुत्र के लिए सुयोग्य वधू चाहिए। परिवार उत्तर प्रदेश से है तथा वर्तमान में गुजरात में गांधीधाम (कच्छ) में स्थायी हैं। इच्छुक परिवार बायोडाटा मेल करें- aryagan@aryagan.org

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16/17 फरवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 फरवरी 2017

प्रतिष्ठा में,

बोधोत्सव पर आयोजित प्रतियोगिताएं

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से ऋषि दयानन्द बोधोत्सव, रामलीला मैदान में बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ शुक्रवार 24 फरवरी 2017 को मनाया जा रहा है। इस आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक स्कूल अपनी भागीदारी निभाएं। प्रात: 10 बजे ध्वजारोहण के तत्काल बाद खेल प्रतियोगिता का आयोजन निम्न कार्यक्रमानुसार होगा:–

दिनांक 24 फरवरी 2017 : प्रात: 10 बजे
ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्र दौड़ व आर्य समाज के नियम दौड़
प्रतियोगिता तीन वर्गों में होंगी

शिशु वर्ग – कक्षा 1 से 5 तक
कनिष्ठ वर्ग – कक्षा 6 से 8 तक
वरिष्ठ वर्ग – कक्षा 9 से 12 तक

बालक और बालिकाओं की स्पर्धा पृथक–पृथक होगी। एक विद्यालय से एक स्पर्धा में तीन प्रतियोगी भाग ले सकते हैं। प्रतियोगी अपने साथ विद्यालय से परिचय पत्र अवश्य लायें।

– कृपाल सिंह, संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह